3.1 डॉ. सिद्धय्या पुराणिक जी की चुनी हुई कविताएँ

1. पहले मानव बनो!

पढ़कर ब्राह्मण बनो
लड़कर क्षत्रिय बनो
शूद्र वैश्य ही बनो
कमाकर पैसे
जो भी बनो
जैसे चाहो बनो
जो भी ठीक लगे बनो
पहले मानव बनो!

हिन्दु मुसलिम बनो
बौद्ध ईसाई बनो
चार्वाक ही बनो
चाहकर भोग
जो भी बनो
जैसी इच्छा बनो
जो भी ठीक लगे बनो
पहले मानव बनो!

राजनेता बनो
राष्ट्र भक्त ही बनो
कलाकार बैज्ञानिक व्यापारी
जो भी बनो
जैसी इच्छा बनो
जो भी ठीक लगे बनो
पहले मानव बनो !

2. सृष्टि की घोषणा

फल में, मक्खन में दही मलाई में
कंदमूल में, शहद में, ईख में केले में
नारियल के पानी में, नदी जल, बाली के दाने में
घोषणा कर रही सृष्टि रुचिकर होकर
'मधुर बनो, मधुर बनो मधुर बनो!'

तारों में, चाँद सूरज में, रतन में
काँसे में, बिजली में, मोती में, सोने में
ज्योति में, आँखों में, उषा के सुनहरे रंग में
घोषणा कर रही सृष्टि छवि बनकर
'छवि बनो, छवि बनो, छवि बनो!'

शब्द में मधुर हो, अर्थ में हो प्रकाश
जीवन की भव्यता को यहाँ प्रकाश मिठास काफी हो
जीवन का मधुर प्रकाश लिखनेवाला चाहिए तो
घोषणा कर रही सृष्टि मीठी छवि बन
'कवि बनो, कवि बनो, कवि बनो!'

3. पूर्वांगना पश्चिमांगना से

हे श्वेत सहेली मुझे कृष्णवर्णी समझ गर्व से मत दुतकारो
कृष्णवर्ण से श्वेत वर्ण ही अधिक कहते बडप्पन दिखाते
श्वेत बादल देता है धरती को केवल टाट-बाट
धरती पर वर्षा होती केवल काले बादलों से।

आँख की दृष्टि काली पुतली से ही अंधापन सिर्फ सफेद
श्वेत केश ही बुढ़ापा यौवन का विजय ध्वज अश्वेत
काली मिट्टी में ही पैदा करना है तुम्हारा पहना सफेद सूत
श्वेत हिम में पैदा कर सकते हैं क्या? पैदा होते सब काले से ही!

अश्वेत होने पर भी उदय मैं तुम तो अस्तमान
तुम हो कमल मैं हूँ कुमुद एक ही जल निधान
तुम श्वेत हाशिया मैं काली श्याही बने प्रेमगीत
देह का रंग, देश का रंग मगर आत्मा का कौन-सा रंग?

तुम जो दंभ करती यांत्रिकता सब काली काली
लोह काला यंत्र काले कोयल भी तो काला
मोटर का चक्र उसकी हवा काली डाँबर का रास्ता काला
यह काला प्रिय, मेरा तन काला कहने में क्यों अप्रिय?

हे श्वेत कन्या सिखाऊँगी आओ शृंगार सार
कुंकुम लगाऊँगी, छोड़ो लाल हानिकर ऐसा विचार
हल्दी लगाऊँगी, छोड़ो हल्दी त्याज्य है ऐसा तर्क
लगाऊँगी आँखों में काजल देखो दर्पण में तेरा रूप!

मैं कपिला मेरी थन में श्वेत दूध बने जीओ आओ
तुम हो हिरन तुम्हारी नाभी में कस्तूरी हूँ आओ
मैं नीलमेघ मेरे पेट में बिजली की चकाचौर-सा लगे
तुम श्वेत पद्म मैं नील भृंग तुम्हारे वक्ष का मधु चूसते!

यह वर्णमैत्री अनिवार्य सहेली सर्वत्र विश्व प्रकृति
दीखता इसी को घोषित करता यही उसकी रीति
प्रातः लाल फिर हलदी चढ़ते धूप श्वेत सहेली
तुम्हारा अंग श्वेत यह छाया काला कहाँ है वैर, सहेली?

4. जग ही कूडल संगम

प्रकृति ही गुरु गगन लिंग है
जग ही कूडल संगम
चूर्ण भस्म है तृण ही पत्री
जड़ है सारा निरा जंगम

पेय जल ही तीर्थ अरु
रोटी ही शिव प्रसाद है
श्रम के स्वेद ही स्नान श्रम का
गीत ही है मंत्र निनाद

अच्छाई को ही देखती अक्षी
भावना से रुद्राक्ष है
अच्छा ही कहूँगा करूँगा
ऐसा विवेक-ही दीक्षा है

सब कुछ शिव का अंश है
ऐसा समझना ही धर्म है
दूसरों को दुःख न देनेवाला
हितकर कर्म ही तो कर्म है।

सभी सब के लिए ऐसा
ज्ञान ही तो ज्ञान हैं।
प्रसन्न हो प्रसन्न करनेवाला खुश हो
खुशी देनेवाली कला ही अमृत निधान है

खिलाकर खानेवाला भाव भक्ति है
नकारना ही तो सुविरक्ति है
साथ पढ़ना, साथ बढ़ना
साथ प्रसन्न हो वही मुक्ति है।

5. हे बसव प्रकाश

हे बसव प्रकाश
कहाँ खेलकर आये हो तुम्?
भारत सारा धूम कर आया
उसाँस हृदय को प्रकाशते आया
निराश हृदय को चमकाते आया
स्त्री के आँसू पोंछकर आया
आशा ज्योति जलाकर आया
दीनों के जीवन में छाये तम को
निगलकर आया
उज्जवल कर आया!

हे बसव प्रकाश
कहाँ खेलकर आये हो तुम?
कन्नड वन में उछल कूदकर आया
वचन कुसुम को कुसुमित कर आया
गीतिकाव्यों को प्रफुल्लित कर आया
संवादों को बढ़ाकर आया
अनमोल बोल बोलकर आया
पामरों के दिल में प्रतिभा की प्रभा
प्रकाशित कर आया, विकसित कर आया!

हे बसव प्रकाश
कहाँ खेलकर आये हो तुम?
कायकक्षेत्र में खुशी से उछलकर आया
स्वेद बिंदु में ब्रह्म दिखाकर
दैहिक श्रम में कैलास दिखाकर
श्रम बिना पाने की लोभ मिटाकर
वृत्ति को तत्व की गरिमा दिखाकर
परिश्रम के शिवमंदिर में
नर्तन कर आया कीर्तन कर आया

हे बसव प्रकाश
आगे कहाँ?
'जग सारा मेरा? बोला
चलूँगा में चलूँगा आगे
जग ही आयेगा मेरे पीछे
अपना-पराया कहूँगा क्या?
सभी समान मेरे लिए
पिता एक ही सब के लिए
सब की भलाई चाहते सर्वत्र
फिर आँऊगा मैं, फिर आऊँगा!

6. श्रमिक हाथों को नमो नमो

श्रमिक हाथों को नमो नमो।
दानी हाथों को नमो नमो
न माँगते न सताते श्रम फल को
पाते हाथों को नमो नमो!

श्रमिक हाथों को
पौधे रोपते हाथों को
रोपे को काटते हाथों को
पत्थर तोड़ते हाथों को नमो नमो!
खेलते हाथों को
दही मथते हाथों को
झाड़ू लगाते दाथों को
गोबर पकड़ते हाथों को नमो नमो!

श्रमिक हाथों को
शस्त्र पकड़ते हाथों को
वीणा बजाते हाथों को
सांत्वना देते हाथों को नमो नमो।
दानी हाथों को
आँसू पोंछते हाथों को
अन्न परोसने हाथों को
ऊपर उठाते हाथों को नमो नमो !

श्रमिक हाथों को नमो नमो।
दानी हाथों को नमो नमो
न माँगते न सताते श्रम फल को
पाते हाथों को नमो नमो!

7. कन्नड दीप

ज्योतित रे ज्योतित
कन्नड प्रदीप
हुआ है हुआ है विमोचित रे
सदियों का शाप !
ज्योति रे ज्योतित
कन्नड प्रदीप !
आँख को चौंधता-सा
देदीप्यमान
हर्ष उमड़ता-सा
शोभायमान
कन्नड़ के घर घर में ।
ज्योतिर्निधान
कन्नड का प्राण
कन्नड़ का सम्मान
जोतित रे ज्योतित
कन्नड प्रदीप !
कन्नड के प्रेमियों की
नयनों की बुझी प्यास
कनड की माटी भी
उत्साहित तरु तमाल
तट में सुबहाव में
वह कृष्णा तुंगा
आमोद तरंगा
शुभ मंगलांगा
जोतित रे ज्योतित
कन्नड प्रदीप !
प्रकाश में नहाया
भू गगन
तम हरते महकता
मलय मधु मारुत
नभ ध्वनित कन्नड
मंगल निनाद
कन्नड का प्राण
कन्नड निधान
जोतित रे ज्योतित
कन्नड प्रदीप !
जलनेवाले चाहिए
तेल बन इसमें
चलने वाले चाहिए
बन बाती इसमें
धरनेवाले चाहिए
दीपक के रूप में
प्रेमियों की सांस बन
धर्म के लिए नत हो
जोतित रे ज्योतित
कन्नड प्रदीप !
चिरकाल जले
कन्नड दीप
प्रकाश बन लोगों को
बन पुण्य प्रदीप
भारत की शक्ति बन
भव्य प्रदीप
मिटाते ताप
बढ़ाते शांति
जोतित रे ज्योतित
कन्नड प्रदीप !

8. अविभक्तं विभक्तेषु !

अविभक्तं विभक्तेषु
इसी में है हमे सुख
कही भी रहो कैसे भी रहो
जपो इसी मंत्र को
पढ़ो इसी सूत्र को
अविभक्तं विभक्तेषु-
अविभक्तं विभक्तेषु!

ब्रह्म विष्णु शंकर
अल्ला हो अकबर
स्मरण करो किसी को भी
झगड़ा क्यों भैया?
उभरे एक ही सुस्वर-
अविभक्तं विभक्तेषु-
अविभक्तं विभक्तेषु!

कश्मीर की वादियों में
केरल पर्ण कुटीरों में
भारत के सभी ओर
यही मंत्र घोषित हो -
यही नाद निनादित हो -
अविभक्तं विभक्तेषु-
अविभक्तं विभक्तेषु!

सप्तशैल पंचनद
घेरे हो पुण्य शरधि
मस्तक पर हिममुकुट!
कैसा देशा कैसी निधि
यहाँ जीने एक ही विधि!
अविभक्तं विभक्तेषु-
अविभक्तं विभक्तेषु!

गणना न करो भेदों की
न गुणो वाद-विवादों को
आसेतु हिमाचल में
एक गीत समझे तो
गाओ मीत यही गीत
अविभक्तं विभक्तेषु-
अविभक्तं विभक्तेषु!

न शत्रुता किसी से भी
न धिक्कार किसी को भी
आगतों के माता पिता
नहीं कोई बराबर इस देश के
बोल तो यहाँ एक ही
अविभक्तं विभक्तेषु-
अविभक्तं विभक्तेषु!

मेरी बात तेरी बात
मेरी सीमा तेरी सीमा
एक ही हो जन्मभूमि
गडबड़ क्या है चला?
अब तो बोल विश्वास से
अविभक्तं विभक्तेषु-
अविभक्तं विभक्तेषु!

जो भी पहनो जो भी धरो
जो भी खाओ जो भी पीओ
स्थित ज़मीन जब एक हो
जले भेद भाव सब
गाओ हमारे ऋषियों के संग संग-
अविभक्तं विभक्तेषु-
अविभक्तं विभक्तेषु!

9. आओ, नवदिन आया है!

आओ नवदिन आया है
साकार हो नयापन !
साफ़ हुए आकाश मैदान
साफ़ हुए जंगल जलधारा
तुम भी हो साफ़ करते
घोषणा करने आया चारण
आओ नवदिन आया है !

बन ही अंकुरित लता खिलकर
अणुरेणु का दिला खिलकर
सौंदर्य शांति लुट गये
खिले हमारा तुम्हारा मन
आओ नवदिन आया है !

पुरातन ही गाढ़ा गया हो
नूतन यह रम्य होकर
बासी को जला डालकर
उभर आया है यह चेतन
आओ नवदिन आया है !

वही दिनकर वही दिन
वही उपवन वही जन
वही काल लीला हो तो
किस में है नयापन?
आया है क्या नवदिन ?

जग पुरातन जड़ पुरातन
जीव सृजन चिर नवीन
नूतनता है दृष्टि में
देख खोल सुलोचनों को
आओ आया है नव दिन !

कुहू कुहू-ओहो ओहो
कुहू कुहू - अहा अहा
कुहू कुहू कोकिला
कोकिला कूको रे
मौनव्रत तोड़कर
रागयोगी बने
हमारे बन की कोकिला ।

मौन खतम निकली कोंपल
आनंदोल्लास से गाऊँगी
तब मनों को छेड़ते
सपने में सता सता ! कुहू.... कुहू....
तन रोमांच मन रोमांच
दे खुशी खुशी कुहू कुहू गाऊँगी
सुप्त प्रेम जागाऊँगी ! प्रेम का देकर उपहार ! कुहू.... कुहू....

विरही दिल जल गया
कली का दिल खिल गया
बस करो कूकना !
रवि का तन तप गया
रसिक हृदय जल गया
बस करो तुम और गाना !

ताप बढ़ा ? नीम चको !
आंबिया रस चको
दोष न दे कोकिल को !
ठंडी छाया ठंडा जल
चंदन है दक्षिणी हवा है
इतना भी ताप बुझता नहीं ?

नीम आम हँस रहे
हम भी से खुशी न हँसे
तो देव न पसंद करेगा आओ
स्वागत करें नवदिन
'शार्वरी' का जन्म दिन।

10. जवाब

प्रियतम जब पूछती है –
क्यों न लाये फूल तो
क्या जवाब दूँ ?

फूल क्यों जब फूल हो तुम
झूठ क्यों बोलूँ?

ऐसा कौन-सा फूल बाजार में सखी
जो तुम में ही पहले न हो ?

तुम में हैं दुनिया के सारे फूल
यदि मैं समझूँ षटपद !

तुम्हारी नासिका की चंपक के
बराबर चंपक है क्याँ?

हो भी तो मुरझा जायेगा
न मुरझाती ऐसी नागचंपका है यहाँ ।

हे मानिनी, होंठ ही तव गुलाब
आँख कलिका, मुझ कमल देखो ।

मंदहास ही मोगरा, गाल केवड़ा
दाँत मल्लिका कामिनी

तू सचेतन पुष्पवन सखी
तो कुसुम फिर क्यों चाहती ?

होड यदि हो फूलों बीच
जीत होगी तुम्हारी ही सखी !

शेष फूलों का रूप एक ही
तुम्हारे फूल के तो विविध रूप !

फूल से फूल सृजन का अचंबा
वहाँ चलता रहता सदा !

गाल-केवडा उसमें खिलता
लाज का लाल गुलाब !

नयन कमल में मान का
निकलता लाल कमल !

मुख कमल में नयन कमल
उसमें यह लाल कमल !

कैसे हाव-भाव कैसी छवि
फिर लायेंगे फूल ?

न रूठो आओ पहनओ गले में
कर-शिरीष माला को

मन का भौंरा उसका मधुरस
पान कर मत्त हो झूले झूमे ।